International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(I), January - March, 2022, pp.97-103

भारत में महिला उद्यमिता अवसर एवं बाधाएँ

सरस्वती चौधरी*

सार

महिला एक नाम शक्ति का एक नाम प्रेरणा का एक नाम करुणा का एक नाम प्यार दया से परिपूर्णता का, परन्तु हम सभी जानते हैं कि जहाँ एक ओर महिला नजाकत प्यार की मूरत है, वहीं उसका एक ओर भी रूप है एक सशक्त महिला के रूप में, एक नायक के रूप, एक पथ प्रदर्शक के रूप में। आइए आज हम महिला के नए रूप से परिचित होते हैं। वह एक सफल उद्यमी के रूप में महिला की एक उद्यमी के रूप में हमेशा से ही औद्योगिक विकास में प्रमुख भूमिका रही है। भारत जैसे विकासशील देश में हमेशा ही उद्यमियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था में एक नायक या प्रधान की भूमिका अदा की है। महिला को एक उद्यमी के रूप में हमारे रूढ़िवादी समाज ने सदैव ही बड़े पैमाने पर उपेक्षित किया है, जिसका अर्थव्यवस्था या व्यापार से कोई लेना देना नहीं है। समाज में महिला को सदैव ही एक गृहिणी के रूप में देखा व स्वीकार किया हैं, जो व्यवसाय करने के लिए बनी ही नहीं है। महिला की उद्यमिता क्षेत्र में सहभागिता न केवल नहीं के बराबर रही है बल्कि वह व्यवसाय करने में उन फर्मो का चुनाव करती है, जिसका पुरुष वर्ग चयन नहीं करता है। एक कुशल गृहिणी से कुशल व्यवसायी बनने का सफर आसान नहीं हैदपरंतु अब यह तस्वीर बदल रही है। एक कुशल गृहिणी एक कुशल उद्यमी के रूप में आगे आ रही है जिसका जीता जागता उदाहरण है ***बाड़मेर जिले के रूमादेवी जिसने भारतीय पारंपरिक हस्तकला कारीगर के रूप में अपनी पहचान बनाई एवं सर्वोच्च नागरिक सम्मान नारी शक्ति 2018से सम्मानित किया गया।*** *आधुनिक भारत में महिलाएं विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु, मध्यम उद्योगों का न केवल कुशलतापूर्वक संचालन कर रही है, बल्कि इन उद्योगों में अपना परचम भी लहरा रही है। हम वर्तमान की बात करें तो संपूर्ण भारत में महिलाएं सदैव ही आर्थिक रूप से मजबूत होने में विश्वास कर रही है। स्वतंत्रता, लैंगिक समानता एवं आर्थिक विकास सदैव साथ साथ चलते हैं। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यह है कि व्यवसायिक एवं वाणिज्यिक क्रियाएं। पुरुष नारी के लिए समान होने के बाद भी महिला अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग क्यों नहीं कर पा रही है? हमारा उद्देश्य यह पता लगाना है कि आखिर वे कौन से कारक हैं जो एक महिला को सशक्त उद्यमी बनने की ओर अग्रसर होने से रोक रहे हैं। इसके साथ ही हमें यह भी पता होना आवश्यक है कि वे कौन से कारक हैं जो उसकी इस प्रतिभा को निखारने में बाधक है। इस पेपर का मुख्य उद्देश्य महिला उद्यमिता के विकास हेतु कुछ गैर पैरामेट्रिक कार्य की मात्रा का निर्धारण करने का प्रयास है ताकि महिला उद्यमिता को संपूर्ण रूप से सफलतम बनाने में इन कारकों को कोटि प्रदरनकी जा सके। इन्हें कैसे सुलझाया जाए ताकि एक सशक्त नारी एक सशक्त उद्यमी बनकर उभर सके। भारत के संदर्भ में महिला उद्यमिता विकसित होने में आने वाली अवसरबाधाएं।*

शब्दकोश: *भारतीय अर्थव्यवस्था, महिला उद्यमिता, रूढ़िवादी समाज, विकासशील देश, आर्थिक विकास।*

प्रस्तावना

एंटरप्रेन्योर शब्द की उत्पत्ति फ्रेंच शब्द Entreprender से हुई है, जिसका अर्थ है एक ऐसा व्यक्ति जिसका एक निश्चित उद्देश्य है वह मानव और भौतिक संसाधनों को एक साथ लाकर इस प्रकार उनका प्रबंधन करता है कि वह वांछित परिणामों की प्राप्ति कर सके। पारस्परिक रूप से हमारा समाज एक पुरुष प्रधान समाज है। हमारे समाज के द्वारा महिला को पुरुष के समान दर्जा प्रदान नहीं किया गया है। महिला सिर्फ घर की

[6] व्यवसायिक प्रशासन (वाणिज्य), एस.एस.जी.पी.जी. पारीक गर्ल्स कॉलेज, जयपुर, राजस्थान।

चारदीवारी में कैद होकर रह गई है परंतु आधुनिक समाज में महिला घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर। समस्त कार्य प्रक्रियाओं में समान भागीदारी दिखा रही है। आज लघु व मध्यम उद्योगों की बढ़ती गुणवत्ता वृद्धि को देखकर महिलाएं न सिर्फ उद्यमिता की तरफ आकर्षित हुई है बल्कि अपनी शिक्षा व अनुभव के सहयोग से अपने व्यवसाय का सफलतापूर्वक संचालन भी कर रही है, जिसके परिणामस्वरूप महिला उद्यमी अपने व्यवसाय के सफल संचालन के साथ साथ ही आर्थिक गतिविधियों व वित्तीय अवसरों को भी अच्छे से भुना रही है। महिला उद्यमिता भारतीय महिलाओं के एक समूह का प्रतिनिधित्व करती है जो आर्थिक क्षेत्र में नए रास्ते तलाश रहे हैं। संगठित व्यापार में महिला को अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हुए प्रवेश देना आजकल आम बात हो गई है। महिला उद्यमिता की औद्योगिक विकास में मुख्य भूमिका रही है। भारत हमेशा से ही उद्यमियों की भूमि रहा है जिन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था में रणनीति रूप से कब्जा किया हुआ है। वर्तमान समय में देश भर में हम एमएसएमई की स्थिति को देखें तो एमएसएमई की स्थिति कुछ इस प्रकार है कि कुल औद्योगिक उत्पादन में लगभग प्रतिशत देश के निर्यात का 30 प्रतिशत रोजगार की स्थिति का एवं 26 मिलियन से अधिक इकाइयों में लगभग 96 मिलियन लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ है। भारत सरकार ने महिला उद्यमी को किसी व्यवसाय में कार्य करते हुए उसकी भागीदारी के आधार पर परिभाषित किया है, जबकि उद्यमी सामान्यतः वह व्यक्ति होता है जो सृजनात्मक मूल्य या विचार के साथ व्यवसाय का आरंभ करें। महिला उद्यमी की बात करें तो वह अन्य महिला उद्यमियों का प्रतिनिधित्व करती हैं और उनसे उम्मीद की जाती है कि अनौपचारिक कार्य क्षेत्रों में उनकी भूमिका सक्रिय रहे। महिला उद्यमी के उदय में उसका परिवार, पर्यावरण, एवं परिस्थितियों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। पुरुष प्रधान समाज में किसी नए उद्यम, व्यवसाय का निर्माण व सफलतापूर्वक संचालन एक बड़ी चुनौती है। एक पुरुष प्रधान समाज का डर, साहसी न होना एवं कम आशावादी नजरिया महिला की व्यावसायिक असफलता का मुख्य कारण बना है और इसमें सबसे प्रमुख कारण व्यवसाय प्रारंभ पूंजी को सुरक्षित रखना है। भारतीय सभ्यता में महिला सदैव ही समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। परंतु समाज में उसकी निम्न स्थिति के चलते उसके उद्यमशीलता का सही तरीके से दोहन नहीं किया गया है। काफी समय के बाद महिला की इस क्षमता को पहचाना गया है। महिला कल्याण के दृष्टिकोण से महिला विकास, महिला सशक्तिकरण, महिलाओं का उद्यमिता में विकास, हमारी विकास योजनाओं, योजना प्राथमिकता का प्रथम पहलू रहा है। इस हेतु हमें नीतियों और विकास कार्यक्रम को बनाना व लागू करना चाहिए परंतु इस नीति, कार्यक्रम को बनाने व लागू करने से ज्यादा जरूरी है महिला के प्रति मानसिकता बदलने की महिला को समान अधिकार देने की जैसे कि संविधान द्वारा एक महिला को प्रदान किए गए हैं। एपीजे अब्दुल कलाम के शब्दों में, **'महिला सशक्तिकरण एक सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक है।'** जब महिला सशक्त होगी तब वे स्थिर समाज का निर्माण सुनिश्चित तौर पर कर सकेगी। इस हेतु एमएसएमई को विकसित किया गया वर्ष 1961 के संशोधन में कृषि व ग्रामीण उद्योग मंत्रालय और लघु उद्योग मंत्रालय को एक ही मंत्रालय में विलय कर दिया गया अर्थात सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग मंत्रालय समस्त विश्व द्वारा औद्योगिक विकास में एमएसएमई को एक इंजन के रूप में स्वीकार किया गया, जिससे सभी विकास की तरफ अग्रसर रहें अर्थातआर्थिक विकास व समान विकास यदि हम भारत के संदर्भ में बात करें तो एमएसएमई अर्थव्यवस्था के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। हाल ही के वर्षों में समस्त उद्योग क्षेत्र को देखते हुए एमएसएमई की वृद्धि दर उच्च रही है। आर्थिक मंदी वह मंदी के समय एमएसएमई के द्वारा नवीनता व अनुकूलता के साथ खुद को बनाए रखना एक सराहनीय पक्ष रहा है।

उद्देश्य

- इसका मुख्य उद्देश्य उस कारण विशेष का पता लगाना है, जिससे महिला स्वयं को उद्यमशील गतिविधियों में शामिल कर सकें।
- महिला के एक सफल उद्यमी बनने की राह में आने वाली बाधाओं का पता करना।
- उद्यमिता के क्षेत्र में महिला के लिए उपलब्ध विकास अवसरों की पहचान करना एवं उन अवसरों का विदोहन करना।

साहित्यक संदर्भ

- **सैदापुर एटअल 2012**– सदियों हमारा समाज पुरुष प्रधान रहा है। उद्यमिता के संदर्भ हम अगर बात करें तो इसमें भी पुरुषों का ही वर्चस्व रहा है परंतु अब समय एवं मान्यताएँ बदल रही है। यह महिला को पुरुष के समान ही एक सफल उद्यमी के रूप देख रही है। भारत के कुल उद्यमियों में महिला उद्यमी 10 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। यह प्रतिशत साल–दर–साल बढ़ रहा है। दसवीं पंचवर्षीय योजना 2002–2007 में महिला सशक्तिकरण पर बल दिया।
- **नरेन्द्र कुमार झा 2012**– महिला उद्यमी के विकास की प्रमुखा बाधा। महिला यदि कही वेतन भोगी कर्मचारी है। फिर भी उसकी प्रतिबद्धता को उचित रूप से स्वीकार नहीं किया गया है। महिला उत्थान करने जन सामान्य के बीच महिला की स्थिति को ऊपर उठाने का परिणाम है कि वैश्विकरण के वर्तमान चरण में जहां प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था महिला विकास व महिला सशक्तिकरण पर बल दे रही है जो महिला हेतु रोजगार के दरवाजें खोलकर उसे स्वयं का व्यवसाय खोलने हेतु प्रेरित कर रही है जिसके परिणामस्वरूप महिला अपनी गृहिणी वाली छवि से बाहर निकलकर एक बहु आयामी पहचान बना रही है। वह अपने परिवार के साथ–साथ अपने व्यवसाय का प्रबंधन कर व्यवसाय का सफलतापूर्वक संचालन कर रही है। आज बढ़ी संख्या महिलाएं व्सयवसाय के माध्यम से आर्थिक और आत्मनिर्भर बनने के अवसर तलाश रही है। फिर भी इन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हैं। इन समस्याओं के समाधान में प्रथम सहायक स्तम्भ स्वयं का जागरूक परिवार एवं महिला के प्रति उनका नजरियां है।
- **शाहएच 2012** –आर्थिक विकास का गति देने में महिलर उद्यमी की मुख्य भूमिका रही है। इसे परखने हेतु मजदूरों के एक क्षेत्र विशेष पर प्रकाश डाला गया जिसमें कार्यरत श्रमिक वर्ग का कौशल उल्लेखनीय है। इसी सफलता के तहत उपक्रम की सफलता को अविश्वसनीय रूप से देखा गया। इसमें अनेक समस्याओं पर प्रकाश डाला गया जिसमें मुख्य रूप से उभरकर आने वाली समस्या तनाव थी जो कार्यस्थल पर कार्यरत सभी महिलाओं में समान रूप से पाई गई। हम इन समस्याओं का समाधान कर महिला को सशक्त एवं आत्मनिर्भर की राह पर अग्रसर कर सकते है।

डेटा एवं अनुसंधान प्रणाली

यह अध्ययन मुख्य रूप से वर्णात्मक प्रकृति का है। यह भारत मे उद्यमी महिला की वर्तमान स्थिति को दर्शाने का प्रयास है इस अध्ययन हेतु द्वितीयक आंकड़े एकत्रित किए गये है। ये अध्ययन पूर्णतया इन आंकड़ोंके विस्तृत अध्ययन पर आधारित है यह घरेलू अंतरराष्ट्रीय जर्नल एवं वेबसाइट पर केंद्रित है।

भारत में महिला उद्यमी की वर्तमान स्थिति

भारत के संदर्भ में यदि हम व्यापार अथवा व्यवसाय की बात करें तो इतिहास काल से ही व्यवसाय भारत के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उदारीकरण के पश्चात भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत तेजी से विकसित हो रही है। भारत के आर्थिक विकास को गति देने में सबसे महत्वपूर्ण कारक राष्ट्रीय और विदेशी पूंजी आदि में वृद्धि है, परंतु शोधकर्ताओं की राय है कि लघु एवं मध्यम उद्योगों ने देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकिभारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में इस क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा है जो एक बड़ी संख्या को रोजगार प्रदान करने का कार्य कर रहे हैं। परंतु इन उद्योगों में महिला वर्ग का योगदान न्यूनतम रहा है, जो नीचे दी गई तालिका नंबर एक व दोमें स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। लघु एवं मध्यम उद्योगों में महिला उद्यमी की स्थिति को दिखाया गया है, परंतु भारत में धीरे–धीरे कारोबारी माहौल पैर पसार रहा है। भारत में ऐसे बहुत कम उद्योग हैं जिन पर महिलाओं का स्वामित्व है। भारत में महिला उद्यमिता विकसित हो रही है परंतु अभी भी यह सब काफी सीमित है। दुनिया की लगभग आधी आबादी महिला से बनी है। वर्तमान समय में महिला को समाज का बेहतरीन आधार माना गया है। भारतीय महिला घर में सजाकर रखा जाने वाला शो पीस नहीं है, बल्कि आधुनिक समाज में महिला ने अपने पैर न सिर्फ घर की चारदीवारी में बल्कि चारदीवारी के बाहर फैला कर अनेक क्षेत्रों में अपना वर्चस्व कायम किया है। इन्ही में से एक क्षेत्र है उद्यमिता।

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यम का प्रतिशत विवरण (पुरुष/महिला स्वामित्व)

क्षेत्र	पुरूष	महिला	कुल
ग्रामीण	77.76	22.44	100
शहरी	81.58	18.42	100
कुल क्षेत्र	79.63	20.37	100

महिल–पुरुष स्वामित्व उद्यम का प्रतिशत वितरण (श्रेणीवार)

श्रेणी	पुरूष	महिला	कुल
सूक्ष्म	79.56	20.44	100
लघु	94.74	5.26	100
मध्यम	97.33	2.67	100
कुल क्षेत्र	79.63	20.37	100

स्रोत–वार्षिक प्रतिवेदन 2020–21, भारत सरकार का सूक्ष्म–लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्रालय

महिला को उद्यमी बनने हेतु प्रोत्साहित करने वाले कारक

- आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने की चाहत
- घर में अतिरिक्त आय की आवश्यकता का महसूस होना।
- अपने बच्चों के उज्वल भविष्य की कामना।
- अन्य महिलाओं की उपलब्धि से मिली प्रेरणा
- दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत बनने की चाहत।
- अपने साथी व परिवार के सदस्यों के लिए एक मजबूत आधार स्तंभ होने की चाहत।
- उच्च शिक्षा एवं योग्यता।
- समाज में एक अलग पहचान बनाना व आत्मसम्मान पूर्ण जिंदगी।
- सरल एवं सहज सोच।

भारतीय महिला उद्यमी के धीमे विकास के कारण

भारतीय महिला उद्यमी को अपने कैरियर में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। भारतीय महिला उद्यमियों के विकास में बाधक चुनोतियाँ इस प्रकार है

- सामान्य समस्या
- विशेष समस्या

महिला उद्यमी के विकास में आने वाली सामान्य समस्याओं निम्न प्रकार है।

- **वित्त की समस्या**

एक उद्यमी के जीवन की सबसे प्रमुख समस्या है अपर्याप्त वित्त कार्यशील पूंजी की कमी, जिसका सामना वह हमेशा ही करता है यह पर्याप्त बैंक बैलेंस और स्वयं के नाम पर किसी प्रकार की कोई संपत्ति न हो पाने के कारण महिला उद्यमी बाह्य स्रोत से वित्त प्राप्त करने में। असमर्थ हैं।

- **विपणन की समस्या**

आम तौर पर महिला द्वारा उत्पादित वस्तुओं के विपणन हेतु उसे बिचौलियों पर निर्भर रहना पड़ता है, जो वस्तु के विपणन के बदले में बड़ी मात्रा में शुल्क लेकर महिला उद्यमी का शोषण करते हैं। यद्यपि इस क्षेत्र में पुरुष द्वारा समान रूप से कार्य किया जा रहा है। बावजूद इसके महिला उद्यमी इस शोषण रूपी किले में सेंध लगाने में असफल रही है।

- **कच्चे माल के अनुपलब्धता**

उत्पादन कार्य के सफलतापूर्ण संचालन हेतु कच्चे माल की उपलब्धता सुनिश्चित होना जरूरी है, क्योंकि इस संसाधन के बिना मानवीय संसाधन की कोई उपयोगिता नहीं है। निर्माण कार्य के समय गुणवत्तापूर्ण एवं पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल व अन्य इनपुट समय पर प्राप्त नहीं होना एक बड़ी समस्या है जिसका सामना महिला उद्यमी द्वारा अपने उद्यम में किया जाता है।

- **स्वस्थ प्रतिस्पर्धा**

चूँकि उद्यमिता महिला व पुरुष द्वारा शासित क्षेत्र है। वर्तमान समय में अत्यधिक अनुभवी पुरुष वर्ग से प्रतिस्पर्धा करते हुए अपने व्यवसाय को मजबूती के साथ बनाए रखना भी महिला उद्यमी के समक्ष एक बहुत बड़ी चुनौती है।

- **प्रबंधकीय क्षमता का अभाव**

किसी भी उद्यम के सफलतापूर्वक संचालन में सबसे महत्वपूर्ण योगदान है प्रबंधकीय क्षमता से युक्त उद्यमी द्वारा अपनी उद्यम का सफलतापूर्वक संचालन, परंतु एक महिला अपने द्वारा संचालित उद्यम की क्रिया में पूर्ण रूप से कुशल हो भी सकती है और नहीं भी। व्यवसाय में होने वाले प्रत्येक गतिविधि को पर्याप्त समय देने में सक्षम नहीं होने के कारण महिला उद्यमी। उद्यम क्षेत्र में पिछड़ी रही।

- **उद्यमी प्रवृत्ति का अभाव**

महिला उद्यमी की एक प्रमुख समस्या यह भी है कि उसमें सामान्यतया पुरुष उद्यमी के सामान जोखिम लेने, नवीन आविष्कार करने एवं साहस पूर्ण कार्य करने जैसे उद्यमशील विशेषता एवं गुणों का अभाव पाया जाता है।

- **जोखिम वहन करने की क्षमता में कमी**

महिला को हमारे समाज द्वारा प्रारंभ से ही घर की चारदीवारी तक एक सुरक्षित जीवन प्रदान किया गया है, जिस सुरक्षित जीवन की वह अभ्यस्त हो चुकी है। जबकि उद्यमिता एक जोखिमपूर्ण कार्य है। महिला में जोखिम वहन करने की करने की क्षमता जैसे मुख्य गुण की कमी है।

- **कानूनी प्रक्रिया**

हमारे यहाँ किसी भी व्यवसाय को प्रारंभ करते समय एक लंबी औपचारिक कानूनी प्रक्रिया का पालन करना होता है जिसमें बहुत अधिक समय व श्रम की आवश्यकता होती है। महिला उद्यमी के लिए यह है एक बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य है।

विशेष समस्याएँ

महिला उद्यमी द्वारा अपने जीवन काल में सामान्य समस्याओं की तरह ही कुछ विशेष समस्याओं का भी सामना करना होता है। यह विशेष समस्याएं वह है, जो उसके उद्यमशील बनने या उद्यमिता की ओर अग्रसर होने में प्रमुख बाधा रही है।

- **पुरूष प्रधान समाज**

भारतीय समाज हमेशा से ही पुरुष प्रधान समाज रहा है जहाँ कभी भी महिला को पुरुष के समान बराबरी का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ है। महिला को सदैव ही पुरूष से नीचे आँका जाता रहा है उसे सदैव पुरुष के अधीनस्थ के रूप में ही देखा गया है, जो महिला के लिए एक प्रमुख समस्या रही है।

- **पारिवारिक असहमति**

पुरुष प्रधान भारतीय समाज में महिला के कर्तव्यों में सबसे प्रधान कर्त्तव्य है अपने बच्चों व पारिवारिक सदस्यों का पालन पोषण करना। उसके पास व्यावसायिक गतिविधियों के लिए बहुत कम समय है। यदि वह इस दिशा में अग्रसर होने का प्रयास करती है तो इसमें उसके परिवार का शैक्षिक स्तर, जीवन साथी का व्यवसाय एवं समाज की सोच व दोहरी मानसिकता, उसकी प्रगति पथ में सदैव बाधक रही है। इस सब में वह अपने परिवार के लिए पर्याप्त समय नहीं निकाल सकती है, जो उसके लिए एक संघर्ष की स्थिति पैदा करता है।

भारत में महिला उद्यमी को बढ़ावा देने में सरकार की भूमिका

आजादी के बाद से ही महिला का विकास हमारा एक प्रमुख उद्देश्य बन गया था। सरकार द्वारा अपनी पंचवर्षीय योजनाओं में लघु क्षेत्र सहित लगभग सभी सरकारी व गैर सरकारी संगठनों में महिलाओं को प्राथमिकता दी गयी। यदि हम बात करे सरकार द्वारा संचालित। पंचवर्षीय योजनाओं की तो जहाँ प्रथम व द्वितीय पंचवर्षीय योजना में महिला विकास हेतु कई उपाय की कल्पना मात्र की गई थी, जिन्हें आगामी योजनाओं में साकार किया गया, जैसे तीसरी योजना में शिक्षा पर बल, पांचवी में महिला प्रशिक्षण पर बल एवं सांतवी योजना में लैंगिक समानता पर बल। आठवीं योजना में महिला सशक्तिकरण पर बल दिया गया। नवीं योजना में महिला घटक नीती बनाई गई, जिसमें महिला को विकसित करने हेतु महिला संबंधित क्षेत्रों को 30 प्रतिशत का लाभ प्रदान किया जाएगा। इस प्रकार योजना दर योजना महिला विकास हेतु अनेक नीतियां बनती एवं संचालित होती रही। इनमें से कुछ इस प्रकार है।

- खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC)
- महात्मा गाँधी, ग्रामीण औद्योगीकरण संस्थान (MGIRI)
- राजीव गाँधी, महिला विकास परियोजना (RGMVP)
- एस बी आई की स्त्री शक्ति योजना।
- महिला विकास निगम।
- महिला विकास कार्यक्रम (EDP)
- महिला समिति योजना।
- इंद्रा महिला योजना।
- इंदिरा महिला केंद्र।
- 10–राष्ट्रीय महिला कोष।

उद्यमिता विकास हेतु सुझाव

महिलाओं द्वारा सामना की जा रही समस्याओं को दूर करने में अनेक उपाय व सुझाव शामिल रहे। परंतु सबसे प्रमुख उपाय है पुरुष प्रधान समाज द्वारा अपने दृष्टिकोण को बदलने की, जहाँ सदैव ही महिला को दोयम दर्जे का माना गया है। महिला को विकसित करने के लिए जितनी आवश्यकता कार्यक्रम एवं नीति बनाने, समान अवसर प्रदान करने की है। उससे कहीं ज्यादा जरूरी है समाज द्वारा महिला के प्रति अपनी सोच के दायरे को बढ़ाने की।

- सकारात्मक वातावरण प्रदान करना जो महिला को आगे बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित कर सके।
- महिला हेतु जागरूकता कार्यक्रम बनाना एवं उन्हें संचालित करना।
- महिला के शैक्षिक स्तर को ऊंचा उठाना एवं शिक्षण प्रशिक्षण के माध्यम से महिला के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना।
- महिला की क्षमता को पहचान कर उसके गुणों को निखारना ताकि वह स्वयं के व्यवसाय की शुरुआत कर सकें।
- महिला विकास हेतु सभा सम्मेलन संगोष्ठी का आयोजन समय समय पर किया जाए ताकि महिला को व्यक्तित्व विकास के साथ साथ अपने व्यवसाय के सफलतापूर्वक संचालन हेतु आवश्यक जानकारी मिल सके।
- महिला को उदार शर्तों पर ऋण प्रदान करना।
- सरकार द्वारा महिला विकास हेतु प्रोत्साहन कार्यक्रम का संचालन किया जाना चाहिए।

- नवीनतम तकनीकों की जानकारी महिला उद्यमी को देना ताकि महिला उद्यमी इन नवीनतम तकनीकों का फायदा अपने व्यवसाय संचालन में ले सकें एवं स्वयं के व्यवसाय को उन्नत कर सके।

भारत की कुछ सफल महिला उद्यमी

- **इंदू जैनः**– वर्तमान में मीडिया समूह बेनेट की अध्यक्ष, पदम विभूषण से सम्मानित(2016)
- **किरण मजुमदारः**–वर्तमान में बायोकॉन लिमिटेड की निदेशक।
- **इंद्रा नूईः**–वर्तमान में पेप्सीको की सीएफओ और अध्यक्ष, पदम विभूषण से सम्मानित मैडम नुई उन महिलाओं का आदर्श एवं प्रेरणाश्रोत हैं, जो उद्यमी बनना चाहती है।
- **सूचि मुखर्जीः**–वर्तमान में लाइमरोड की संस्थापक इन्हें उभरती प्रतिभा के रूप में जाना जाता है।
- ऋचा कौरः–वर्तमान में ऑनलाइन लांजरी स्टोर जिवामे की संस्थापक zivameis the first online lingerie store

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय महिला उद्यमी अपने आप में एक मिसाल है। वह अपने उद्यम गुणों एवं कौशल के दम पर न केवल सफलतापूर्वक व्यवसाय संचालित कर रही है, बल्कि अपने नारी शक्ति गुणों से। अपने परिवार को भी संभाल रही है। उसने एक महिला के रूप में अपने परिवार व समाज में और एक महिला उद्यमी के रूप में अपने व्यवसाय में एक बेहतरीन संतुलन बना रखा है। वह अपने घर परिवार को साथ लेकर सफलतापूर्वक अपने व्यवसाय को न सिर्फ आगे बढ़ा रही है। बल्कि स्वयं को स्थापित कर व्यवसाय में सफलता का परचम लहरा रही है। भारत में बड़ी संख्या में महिला उद्यमी हैं और किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के विकास में महिला उद्यमी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अगर हम बात करें वर्तमान व्यावसायिक जगत की तो महिला उद्यमी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वह अपने काम और अपने मातृत्व के बीच संतुलन स्थापित कर सकने में पर्याप्त रूप से सक्षम है। एक सक्षम, शिक्षित गुणों से भरपूर महिला को स्वयं का व्यवसाय करने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। वे किसी अन्य संस्थान में काम करने की बजाए अगर स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ करती है। तो वह अपने जैसी न जाने कितनी महिलाओं को रोजगार प्रदान करने के साथ उनके गुणों व योग्यताओं को निखारकर एक सशक्त व्यक्तित्व का निर्माण कर सकती है। सरकार द्वारा महिला उद्यमी को विकसित करने हेतु अनेक योजना व कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं, जो मुख्य रूप से सिर्फ महिला पर केंद्रित है। महिला उद्यमी द्वारा व्यवसाय संचालन में वित्त, स्वास्थ्य, विपणन, पारिवारिक समस्याओं जैसी अनेक समस्याओं का सामना किया जा रहा है। सरकार द्वारा समय समय पर महिला उद्यमी हेतु दिशानिर्देश निकले जाने चाहिए ताकि सशक्त राष्ट्र की सशक्त नारी एक मजबूत शक्ति के रूप में उभर कर सामने आ सके।

❖◆❖